IMPACT FACTOR 7.50 (SJIAI)

बिहार शोध समागम BIHAR SHODH SAMAAGAM

Multidisciplinary, Multi-Lingual, Peer Reviewed /Refereed Open Access Journal
Vol. 4, Issue 3 July-September, 2026
Available online : https://www.biharshodhsamaagam.com/
https://doi.org/10.5281/zenodo.23193359

ISSN : 3048-6971

केरल का मन्नान समुदाय : एक सामाजिक-सांस्कृतिक अध्ययन

डॉ. संजीव कुमार. के
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग
एम.इ.एस कल्लडी. कॉलेज (ओटोणमस)
मन्नाटकाड, पालकाड, केरल .678583

भूमिका एवं सामाजिक व्यवस्था-

केरल में मुख्य रूप से इडुक्की ज़िले में निवास करने वाला एक जनजातीय समुदाय मन्नान समुदाय है। 'मन्नान' शब्द का प्रयोग 'मिट्टी' और 'मनुष्य' —इन दोनों अर्थों में किया जाता है।तमिल और मलयालम भाषाओं में 'मन्नन' शब्द का अर्थ 'राजा' होता है। मन्नान जनजाति के लोग यह मानते हैं कि उनके पूर्वज वन के राजा थे। मन्नान समुदाय की मान्यता के अनुसार, उनके पूर्वजों ने तमिलनाडु के मधुरै के पांड्य राजा के लिए युद्ध किया था। युद्ध में अपना सब कुछ खोने के बाद वे जंगल में आकर बस गए। मन्नान समुदाय मलयालम और तमिल मिश्रित भाषा का उपयोग करता है।मन्नान समुदाय के लोग जिन स्थानों पर निवास करते हैं, उन्हें 'कुड़ी' या 'कूरा' कहा जाता है। एक कुड़ी में लगभग 20 से 100 तक घर पाए जाते हैं। इस प्रकार की बस्तियाँ जंगलों के बीच तथा आबादी वाले क्षेत्रों के निकट स्थित होती हैं।कूरा में एक घर को 'कुर' कहा जाता है। इसका आधार चतुराकार रूप में मिट्टी से थोड़ा ऊँचा बनाया जाता है। इन घरों के बीच लगभग 30 से 100 फीट तक की दूरी होती है।छत की छप्पर बाँस की पत्तियों और जंगली घास से बनाई जाती है।मन्नान समुदाय के घरों में खिड़कियाँ नहीं होती हैं। सभी जीव-जंतुओं की माता के रूप में पृथ्वी को मानने के कारण वे चारपाई पर सोने को अनादर मानते हैं।

प्रत्येक कुटी की प्रशासन व्यवस्था संभालने वाले व्यक्ति को "काणिक्कारन" (काणिक्कार) कहा जाता है।काणिक्कारन के अधीन वारिकुडियानवन, पेरियकुडियानवन, इळन्तारीकुडियानवन, वलिय इळन्तरी, इळैवट्टम् , तण्णीपात्ता और तण्डक्कारन जैसे अधिकार पदों पर कार्य करने वाले व्यक्ति भी होते हैं।इन सबके ऊपर एक राजा होता है। वह 'राजमन्नान' के नाम से जाना जाता है। उसका एक मंत्री भी होता है।स्त्रियों और पुरुषों को समान स्थान प्राप्त होने के बावजूद भी, सत्ता से जुड़े पदों का निर्वहन तथा नियंत्रण पुरुषों द्वारा ही किया जाता है। परिवार के भरण-पोषण की जिम्मेदारी स्त्रियों पर होती है।

रीति-परंपराएँ एवं वैवाहिक संस्कार

मन्नान समुदाय में अनेक रीति-रिवाज और अनुष्ठान प्रचलित हैं। मन्नान समुदाय में महिलाओं के मासिक धर्म को 'कीशाय' कहा जाता है। इस समुदाय में यह प्रथा प्रचलित है कि ऋतुमती हुई लड़की को छह दिनों तक घर से बाहर रहना पड़ता है। इस अवधि में लड़की जिस स्थान पर रहती है, उसे 'वण्णक्कूरा' (पल्लाप्पुरा) कहा जाता है।इस अवधि में लड़की को पुरुषों को देखने और घर में पकाया हुआ भोजन खाने की अनुमति नहीं होती है। घर से लाए गए चावल और सब्जियों से लड़की स्वयं भोजन पकाकर खाती है।सातवें दिन समुदाय की सभी महिलाएँ ऋतुमती हुई लड़की के पूरे शरीर पर हल्दी लगाकर उसे नदी में स्नान कराने के लिए ले जाती हैं। स्नान के बाद लड़की को नए वस्त्र और आभूषण उपहार में दिए जाते हैं। इस अवसर पर सभी के लिए छोटे स्तर पर सामूहिक भोज का आयोजन भी किया जाता है।सातवें दिन स्नान करके लौटने के बाद भी लड़की को घर के भीतर एक अलग, पर्दे से घिरा हुआ कमरा बनाकर दिया जाता है। उसे इस कमरे में चार दिनों तक रहना पड़ता है। इस कमरे को 'कन्निमुट्टु' कहा जाता है।

विवाह प्रायः मुरै (निकट संबंधी) के लड़के और मुरै लड़की के बीच होता है। इनके विवाह की बातचीत बचपन में ही तय कर दी जाती है। वयस्क होने के बाद वर, वधू के घर जाकर रहने लगता है। जब वधू के माता-पिता को लगता है कि वर उनकी बेटी के लिए उपयुक्त है, तब वे विवाह संपन्न कराते हैं। इस अवधि में वर और वधू के बीच पति-पत्नी का संबंध स्थापित नहीं होना चाहिए। जब माता-पिता को यह विश्वास हो जाता है कि दोनों का जीवन संतोषजनक है और वे एक-दूसरे के साथ सामंजस्यपूर्वक रह सकते हैं, तभी उनका विवाह संपन्न कराया जाता है।पहले इस अवधि की समय-सीमा पाँच वर्ष तक होती थी, लेकिन अब इसमें बदलाव आया है। वर्तमान में एक वर्ष की अवधि पूरी होने के बाद ही विवाह संपन्न कराने की प्रथा प्रचलित हो गई है।विवाह के समय वर, वधू की माता को थोड़ा ' मुरुक्कान'(पान-सुपारी) देता है। वधू की माता उसे अंदर खड़ी अपनी बेटी के हाथ में सौंप देती है। 'मुरुक्कान' स्वीकार करने के बाद वर-वधू परिवार के बुजुर्गों से आशीर्वाद प्राप्त करते हैं। इसके बाद दोनों को एक चटाई पर बैठाया जाता है। वे एक-दूसरे के गले में फूलों की माला पहनाते हैं। अंत में, 'मुरुक्कान' को लपेटकर एक-दूसरे के मुँह में खिलाते हैं। इसी के साथ विवाह की रस्में समाप्त हो जाती हैं।

मृत्यु संस्कार एवं दफ़न की परंपरा

मृत्यु के बाद किए जाने वाले संस्कारों का पालन ये लोग बहुत ही व्यवस्थित और परंपरागत ढंग से करते हैं। मृत व्यक्ति को जमीन पर चटाई बिछाकर लिटाने के बाद उसके माथे पर चंदन

लगाया जाता है और उसके ऊपर एक सिक्का रखा जाता है।इसके बाद मृत व्यक्ति के शरीर को रेशमी वस्त्र से ढक दिया जाता है। विवाहित महिलाएँ सिरहाने की ओर तान और धागा रखती हैं। पूरी रात 'कूत्तु' (मन्नान समुदाय की एक पारंपरिक कलारूप) का आयोजन किया जाता है।मृत व्यक्ति का अंतिम संस्कार किए जाने तक मांत्रिक मंत्रोच्चारण करता रहता है। ऐसा इसलिए किया जाता है ताकि मृतक की आत्मा जीवित व्यक्तियों को परेशान न करे।घर के आँगन में दक्षिण से उत्तर दिशा में खोदी गई कब्र में शव को इस प्रकार उतारकर रखा जाता है कि उसका सिर दक्षिण दिशा की ओर रहे। कब्र में पूजा-सामग्री (धान और फूल) बिखेरने के साथ-साथ मृत व्यक्ति द्वारा उपयोग की जाने वाली सभी वस्तुएँ भी रखी जाती हैं। यदि मृत व्यक्ति वृद्ध हो, तो उसके द्वारा उपयोग किए जाने वाले काम के औज़ार, चाकू, मदिरा और पान-सुपारी आदि भी कब्र में रखे जाते हैं। वहीं, यदि मृतक बच्चा हो, तो उसके द्वारा उपयोग किए जाने वाले खिलौने भी कब्र में रखे जाते हैं।कब्र को मिट्टी से ढकने के बाद इस संस्कार में भाग लेने वाले सभी व्यक्ति नदी या झरने में जाकर स्नान करते हैं और वापस आकर सामूहिक भोज करते हैं।यदि पति की मृत्यु हो जाती है, तो पत्नी को एक वर्ष तक सादा जीवन व्यतीत करना होता है। इसी प्रकार, यदि पत्नी की मृत्यु हो जाती है, तो पति भी एक वर्ष तक सादा जीवन व्यतीत करता है और इस अवधि में दाढ़ी बढ़ाता है।

आजीविका और संस्कृति

मन्नान समुदाय के लोग अपने कृषि-क्षेत्रों में खेती करके तथा बाहर जाकर मजदूरी करके अपना जीवनयापन करते हैं। वे मुख्य रूप से रागी और धान की खेती करते हैं। कृषि संबंधी कार्य कुटी के प्रमुख कानिक्कारन के नेतृत्व और निर्देशों के अनुसार किए जाते हैं।मन्नान समुदाय में स्थानांतरणशील कृषि (झूम खेती) तथा सामूहिक कृषि की प्रथा प्रचलित है। इनका विश्वास है कि 'पुल्लुवशि' भूमि की रक्षा करने वाले एक शुभ देवता हैं। इसलिए खेती शुरू करने से पहले मुर्गे की बलि दी जाती है। कुछ क्षेत्रों में कॉफी और काली मिर्च की खेती भी की जाती है।मन्नान समुदाय के लोगों के लिए गाय और भैंस का मांस वर्जित है। वे जंगल से प्राप्त शहद और जंगली कंद-मूल का भी भोजन के रूप में उपयोग करते हैं। मन्नान समुदाय में झरनों से प्राप्त मछली और केकड़ों को भूनकर खाने की परंपरा भी प्रचलित है।

ये लोग औषधीय वनस्पतियों और जादू-टोने को उपचार के साधन के रूप में अपनाते हैं। उपचार की जिम्मेदारी 'विच्चकारन' की होती है। 'विच्चकारन' का अर्थ है—ज्ञान रखने वाला व्यक्ति।उन्हें जादू-टोना, मंत्रों तथा औषधीय वनस्पतियों के बारे में आवश्यक ज्ञान होना चाहिए। इनके द्वारा उपयोग की जाने वाली औषधियों में केवल हरी पत्तियाँ ही नहीं, बल्कि कुछ पशुओं का

मल और मूत्र भी शामिल होते हैं। इनका विश्वास है कि माता-पिता का श्राप फलित हो सकता है और वह विभिन्न रोगों का कारण बन सकता है।

पारंपरिक लोकनृत्य एवं लोकसंगीत

मन्नान समुदाय का सबसे प्रमुख अनुष्ठानिक कलारूप 'मन्नान कूत्तु' है। इसमें तमिल महाकाव्य शिलप्पदिकारम् तथा कण्णगी और कोवलन की कथा प्रस्तुत की जाती है। इस कलारूप में केवल पुरुष ही भाग लेते हैं और स्त्री-पात्रों की भूमिका भी पुरुषों द्वारा ही निभाई जाती है।इसमें मुख्य रूप से तीन पात्र होते हैं–पेन कूत्ताडी (स्त्री कलाकार), आण् कूत्ताडी (पुरुष कलाकार) और कोमाली (विदूषक)। इस कलारूप का प्रदर्शन राजा के राज्याभिषेक, फसल कटाई के त्योहारों, पहाड़ी देवताओं की पूजा, विवाह तथा अंतिम संस्कार के अवसरों पर किया जाता है।'चारल' (पशु की खाल से बना एक प्रकार का वाद्ययंत्र) और 'मत्तालम' (मद्दलम) जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है। मन्नान समुदाय की महिलाओं का एक पारंपरिक नृत्यरूप 'कुम्मिकली' है। उत्सवों के अवसर पर महिलाएँ एकत्रित होकर तालियाँ बजाते हुए गीत गाती हैं और नृत्य करती हैं। इस प्रकार वे कुम्मिकली प्रस्तुत करती हैं।

वर्तमान चुनौतियाँ एवं निष्कर्ष

वर्तमान समय में मन्नान समुदाय वन क्षेत्रों से बाहर आकर नए युग की चुनौतियों का सामना करते हुए मुख्यधारा के समाज में प्रवेश कर रहा है। पुरानी पीढ़ी की तुलना में नई पीढ़ी में शिक्षा का स्तर काफी बढ़ा है। वन कानून लागू होने के बाद उन्हें प्राप्त भूमि पर खेती करने और पशुपालन के माध्यम से वे आज बेहतर जीवनयापन कर रहे हैं।नई पीढ़ी के लोग उच्च शिक्षा प्राप्त करने तथा रोजगार के अवसरों की तलाश में शहरों की ओर पलायन कर रहे हैं। इसके परिणामस्वरूप पारंपरिक जनजातीय रीति-रिवाजों और कलारूपों में भाग लेने वालों की संख्या धीरे-धीरे कम होती जा रही है।आज मन्नान समुदाय अपनी जनजातीय परंपराओं और सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित रखना चाहता है। साथ ही, आधुनिक शिक्षा और बदलती जीवनशैली के माध्यम से प्रगति की दिशा में भी अग्रसर है।

सहायक ग्रंथ :-

1.केरल की जनजातीय विरासत (केरलत्तिन्टे गोत्रवर्ग पैतृकम्) – डॉ.आर. गोपीनाथन

2.केरल की जनजातीय जातियाँ (केरलत्तिले गोत्रवर्ग विभागंगल्) - एस. रामनुण्णि

3.केरल का अफ्रीका (केरलत्तिले आफ्रिका) - के. पानूर

4.केरल के आदिवासी: कला और संस्कृति (केरलत्तिले आदिवासिकल् कलयुम् संस्क्कारवुम्) - मनोज मातिरप्पल्ली

5. केरल के आदिवासियों का जीवन और संस्कृति (केरलत्तिले आदिवासिकलुडे जीवितवुम् संस्कारवुम्) – डॉ. सीलिया थॉमस पेरुम्पनानी